REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 5 | FEBRUARY – 2017

मिथिलेश्वर की चुनी हुई कहानियों में दलित लोगों का संघर्ष

Dr. T. Sreedevi
Associate Professor, Department of Hindi, M.G. College, Thiruvananthapuram, Kerala.

आधुनिक युग में दलित का संकुचित अर्थ शूद्र या अस्पृश्य तक सीमित न रहकर व्यापक बन गया है। इस व्यापक अर्थ में जिन्हें 'दलित' माना जाता है उनकी कोई विशेष जाति नहीं है। जाति को महत्व न देकर मनुष्य की पतितावस्था, दुरवस्था तथा उसकी लाचारी और शोषण को देखा जाता है। सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से जिसका शोषण होता है, स्वतन्त्रता, समता और प्रगति से अपरिचित रहकर जो अपने मालिक की प्रमाणिक दासता निभाया है और जिसके जीवन में ज्ञान या प्रकाश के अभाव में अज्ञान या अन्धेरा छाया हुआ रहता है, ऐसा व्यक्ति दलित है- चाहे उसकी जाति ब्राह्मण क्यों न हो। और आगे दलित के व्यापक अर्थ के अंतर्गत जाति, व्यवसाय, धर्म, रंगभेद और लिंग को महत्व न देकर मनुष्य की पतितावस्था, लाचारी, दुरावस्था तथा उसके शोषण को महत्व दिया जाता है। अतः दलित के व्यापक अर्थ के अंतर्गत, शूद्र, हरिजन डिप्रेस्ड क्लासेस के सभी लोग आयेंगे। इसके साथ ही उच्च एवं समृद्र समाज के पैरों तले कुचला हुआ आर्थिक शोषण से शोषित तथा निम्नवर्ग की भांति दयनीय और कष्टमय जीवन बितानेवाले सभी मजदूर, किसान, नौकर, नारियों, भूमिहीन, बेघर जैसे सभी लोग जो आर्थिक अभाव के कारण मनुष्य की तरह सम्मान से जी नहीं सकते, ऐसे सभी लोग चाहे ये किसी भी जाती, धर्म, व्यवसाय और लिंग के क्यों न हो वे दलित वर्ग के अंतर्गत आयेंगे।

दलित मनुष्य प्रगति में सबसे पिछडा हुआ और पीछे दबाया हुआ सामाजिक वर्ग है। दलित कि प्रस्तुत विविध परिभाषाएं दलित संज्ञा का कल तक का केवल परम्परागत हरिजन या अस्पृष्य अर्थ छोडकर आगे बठा है। 'दलित' के आशय को लेकर हर एक के मन में अलग-अलग भ्रम है। इस भ्रम को दूर करके एक ही आशय को ग्रहण करने केलिए दलितोद्वारक डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचारों में सन्दर्भ देखने नितांत ज़रूरी है। सभ्यता के विकास में एक ऐसी अवस्था -आई जबकि लोग अपने अपने स्थानों पर बस गए और खेती गोपालन आदि के रूप में नियमित जीवन बिताने लगे। लेकिन अनेक लोग, अनेक कारणों से सभ्यता की इस दौड़ में छूट गए। अंत में जब इन बिखरे हुए खानाबदेश या छितरे हुए लोगों ने सभ्य बस्तियों का एक हिस्सा बनने की कोशिश की तो बसे हुए लोगों इन्हें अपने समाज का एक अंग मानने से इनकार कर दिया। बसे हुए और छितरे हुए लोगों के आचार व्यवहार में तब तक बहुत फर्क आ चुका था ये छितरे हुए ही आज का अछूता दलित है।

डॉ. अंबेडकर अपने इस ग्रन्थ में अस्पृष्य वर्ग के अर्थ-बोध केलिए डिप्रेस्ड क्लास शेड्यूलड कस्टम, हरिजन और गुलाम जैसे अलग-अलग नाम प्रयुक्त किये हैं। उनके अनुसार ये सभी नाम दलित के संक्षिप्त अर्थ से हिन्दू जाति व्यवस्था और विशिष्ट वर्ग 'अछूत' का बोध होता है और व्यापक अर्थ से अस्पृष्य, शूद्र, हरिजन डिप्रेस्ड क्लासेस के साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से शोषित-पीडित मानव का बोध होता है चाहे वह किसी भी जाति के क्यों न हो।

व्यक्ति अपने मानसिक समस्याओं के आतिरिक्त सामाजिक समस्याओं पर भी संघर्ष करना पडता है। समाज में अनेक प्रकार के संघर्ष होते हैं- अर्थिक, राजनेतिक, धार्मिक, संस्कृतिक आदि। समाज के संघर्षों का फल निम्नवर्द के व्यक्तियों पर पडता है। इस वर्ग के अंतग्रत ऐसे लोग आते हैं जिनके अपना संपूर्ण जीवनकाल उच्चवर्ग के लोगों की सेवा में ही व्यतीत हो जाता हैं।

मिथिलेश्वर एक ऐसा कहानीकार है जिनकि कहानियों में निम्नवर्ग

के दलित, दमित लोगों का जीवन संघर्ष हम देख सकते हैं। इनके पात्र जीवन भर आजीविका केलिए उच्चवर्ग अथवा कुछ सीमा एक मध्यवर्ग के सम्पर्क में ही रहता है। इनमें खेतिहर किसान, मज़दूर, श्रमिक, अछूत या अस्पृष्य आते हैं। कुछ पात्र कभी-कभी इन संघर्ष के प्रति विद्रोह प्रकट करते है और कुछ लोग इन संघर्षों को सहती हैं।

वर्तमान समाज अनेक प्रकार के विसंगतियों और विडंबनाओं से होकर गुज़र रहा है। आर्थिक और राजनीतिक समस्याएँ आज अधिक रूप से होते है साथ ही साथ छूत-अछूत की समस्याएँ भी अधिक होती है। इन रूढियों और अन्दविश्वासों के प्रति कोई विद्रोही व्यक्ति का उदय होता है। वह इनके प्रति विद्रोह करके एक नया रूप लाना चाहते हैं। यह व्यक्ति निरर्थक सामाजिक व्यवस्थाओं को चुनौती देने केलिए तैयार होते है और आंधी की तरह इन सामाजिक बुराइयों की नीव हिलाने आगे बढते हैं। मिथिलेश्वर की पत्थर की लकीर कहानी का नायक हरदयाल ऐसी हिम्मत रखता है कि वह तत्काल सारी सामाजिक अव्यवस्थाओं को ललकार कर, संघर्ष करते हुए आगे बढता है और जीवन के पथ पर एक अमिट छाप छोडकर बिदा लेता है।

भारत जैसी देश में आज भी वर्ण व्यवस्था और जातीयता होती है। मिथिलेश्वर की इस कहानी में इसका चित्रण व्यक्त किया है। अछूत कन्या के साथ रहने के कारण हरदयाल को अपने परिवार से और अपने समूह से बाहर निकलना पडता है। ''बाबा हरदयाल को उनका हिस्सा देकर घर और बिरादरी से उन्हें निकाल दिया गया या, क्योंकि तब हमारे गाँव में इस तरह का कसूर अक्षम्य समझ जाता था।''[1] लोग इसप्रकार अतीत बन जाता है कि वह ज्ञानी होते हुए भी अज्ञानी बनता है। अर्थति अत्याचार करनेवाले लोग यह नहीं समझते हैं कि अछूत भी मनुष्य है। इसलिए व्यक्ति को विवेचन करके संघर्ष करता है। ''वर्ण व्यवस्था या जाति व्यवस्था ने समाज में कई वर्गों का जन्म दिया है और ये वर्ग आपसी लडाई, कलह और देष की आग में जल रहे हैं।''[2] निम्न वर्गीय जीवन में यह आज भी होनेवाला संघर्ष है। इस संघर्ष के प्रति विद्रोह करके कोई व्यक्ति समाज में आता है तो वह उस समाज के आखों का धूल बनता है। लेकिन भी वह व्यक्ति ये सब झोलते हुए आगे बढता है। वह अपने समाज में होनेवाले अन्यायों को समूह के समक्ष प्रस्तुत करता है। इसकेलिए वह अपने बहुमूल्य वस्तुओं को नष्ट करना पडता है। कथाकार इस कहानी के माध्यम से सबकुछ छोडकर, अर्थात समाज के अन्याय के कारण नष्ट होकर अकेले रहनेवाले निम्नवर्गीय प्रतिनिधि हरदयाल का चित्रण किया है। इसप्रकार चित्रण करके मिथिलेश्वर ने समाज के प्रति विद्रोह ही प्रकट करता है। निंम्नवर्गीय लोग कई संघर्षों से पीडित है इसके साथ अछूत होने के कारण वह सभी से भिन्न रहने लगता है। हम कहते है सभी वर्ग एक है। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्त होने से भी पुराने का एक धूली अब भी बाकी है।

निम्नवर्ग के लोग अपनी आर्थिक स्थिति से भी संघर्ष करता है साथ ही पूंजीवादियों के अत्याचार और सरकारि नियमों में उलझता है। ऐसी स्थिति को व्यक्त करनेवाली कहानी है बन्द रास्तों के बीच। ग्रामांचल में रहनेवाले गरीब चरवाहे बनिहार मज़दूर की नियति प्रस्तुत कहानी का नायक का प्रतिनिधि है । लाख चाहने पर भी ये लोग मालिक के अन्याय अत्याचारों के खिलाफ न आवाज़ उठा पाते हैं और न ही काम छोड पाते हैं। यह मालिक जो बहुत बडी ज़मीन का मालिक है, उसका सारे गाँव के लोगों पर रौब है। कहानी का नायक जगेसर को भी अपनी एक दूकान सरकार की तरफ से ढहा दी जाती है, मालिक से यह घबर सुनकर वह पूरी तरह से टूट जाता है। ''दौलत जिसके नसीब में बदा होता है उसी को मिलाता है। सड़क के किनारे दूकान बना लेने से आद्मी अमीर नहीं हो जाता है। आज सुबह तुम्हारी दूकान ढहा दी गयी है''।[1]

उसका एक जो कभी पूरा नहीं हो पाता और कर्ज चुकाने का, रोडी -रोटी चलाने का रास्ता उसे कहीं नज़र नहीं रहने दिया था। उसे लगता हे दुनियाँ के सब रास्ते उसकेलिए बन्द हो चुके हैं और इन बन्द रास्तों के बीच वह खडा है कहाँ से निकल नहीं पाता। मिथिलेश्वर ने ग्रामीण जीवन की व्यथा को यहाँ स्पष्ट दिखाता है साथ ही दुष्ट ज़मीन वर्ग के प्रतिनिधि को भी चित्रित करता है। ''ग्रामीण निम्नवर्ग कर्ज लेकर अगर अपने अस्तित्व की रक्षा करना भी चाहे तो शीर्षकों से वह बच नहीं पाता। कर्ज का रुपया हडपने में भी शोषकों को तानिक भी शर्म नहीं आते।''[2]

ग्रामीण जनता के प्रति सोषण करने की प्रक्रिया कोई नई बात नहीं। यह तो बहुत पुराना ही होता है। 'बन्द शास्तों के बीच' कहानी का नायक अपनी पत्नी और बेटे के हंसीन चेहरे को देखने केलिए मालिक से कर्ज लेकर एक दूकान बनता है। लेकिन उनको एक सुख

[1]बन्द रास्तों के बीच- मिथिलेश्वर पृ.स. 55

[2]समकालीन हिन्दी कहानी और समाजवादी चेतना- डा. किरणबाला पृ.स. 154

जीवन बिताने का अवसर नहीं मिला। सरकारी नियमों और मालिक की क्रूर बातें उन्हें असहाय बनता है और उनके सुन्दर सपनों का विघटन भी कर सकता है। "सरकार की आर्थिक नीति आम आद्मी को निरंतर तंगहली की चपेट में रही है। कोई भी ईमानदार और परिश्रमी आद्मी सुख की रोटी नहीं खा सकता, वह अमीर नहीं बने सकता।"[1] निम्नवर्ग के लोक निरन्तर उच्चवर्ग के लोगों से शोषिक होती है।

समाज बदलता रहता है उसके साथ व्यक्ति भी बदलना चाहिए। "मनुष्य के समस्त आन्तरिक विकास का केन्द्र सामाजिक परिवेश ही हो सकता है। व्यक्ति एक इकाई के रूप में अपनी सामाजिक परिवेश से कटा नहीं रह पाता।"[1] मिथिलेश्वर की कहानी आखिरी बार में निम्नवर्गीय प्रतिनिधित्व सरना के रूप में गाँव और शहर के बदलते स्वरूप का चित्रण करता है। नाथ होने के कारण वह परिवार में अकेला होता है। अपने को समझनेवाले व्यक्ति भी उन्हें यातनाएँदेती थी। उन्हीं यातनाएँ होते हुए भी एक सहायग्रस्थ हाथ नैना देती थी। लेकिन यातनाएँ अधिक होने के कारण वह गाँव छोडकर नगर में चला जाता है। अर्थात साधारण व्यक्ति सुख पूर्ण जीवन बीतने केलिए अपने जहग को छोड़कर दूसरी जगह में जाता है। लेकिन वह नहीं समझता है, कि उनकेलिए सुख जीवन वहाँ से नहीं मिलेगा। निम्नवर्गीय व्यक्ति कहीं भी जाने से उनको यातना के सिवा कुछ भी नहीं मिलेगा। निम्नवर्गीय व्यक्ति के पास पैसा नहीं, बल नहीं। इसलिए वह दूसरे व्यक्तियों के पाव पकडते हैं। इस कहानी में सरना की अवस्था ऐसी दिशा में हो रही है। नगर में उनकी अवस्था दयनीय होने के कारण वह अपनी गाँव में वापस आता है। लेकिन वह देखा कि गाँव बदल गयी है, वहाँ के लोग भी बदल गयी। सहाय देनेवाली नैना लडकी भी अपनी परिवार केलिए वेश्या बन गयी।

नगर के शारीरिक और यहाँ के मानसिक संघर्ष उन्हें अधिक वेदना देता है। "शहर में शारीरिक रूप से वह दुःखी ज़रूर था, लेकिन मानसिक रूप से इतना पीडित कभी नहीं हुआ था। नैना की पीडा जहर बनकर उसके पूरे शरीर में व्याप्त हो चुकी है।"[1]

निम्नवर्गीय लोग सभी कारणों से पीडित है। क्योंकि वह आवारा है। उसके प्रति कोई सहानूभूति प्रकट नहीं करता लेकिन उनके जीवन को उच्चवर्ग के लोग कठपुतली की तरह बनती है। मिथिलेश्वर की कहानी न चाहते हुए भी में इस तरह से पीडित एक मदारीवाला का चित्रण करती है। वह अपने पेट केलिए गाँव-गाँव जाकर टमरू बजाती है। लेकिन कोई उनके प्रति सहानुभूति प्रकट नहीं करती। वे लोग उनकी वेदना को दिखकर हँसते हैं। आज समूह में दयाशील आदमी कम है। कई लोग आवारों को डाकू, सी.आइ.डी. आदि समझकर घर से अलग करती है। इसप्रकार करने से वह लोग कैसी जीवन बिताते हैं। इन लोग को घर की पालन केलिए अपनी पत्नी और बच्चे को काम करने केलिए बेचते थे। लेकिन उच्चवर्ग के लोग उन स्त्रीयों का बलात्कार करती है। इस कहानी में मदारीवाले की बेटी से ऐसी दुर्घटना होती है। इसप्रकार क्रूद्ध होकर मदारीवाला उच्चवर्ग के व्यक्ति को मारने केलिए जाते हैं। लेकिन वहाँ आने से वह समझता है कि वह शक्तिशाली नहीं, धनिक नहीं। वह केवल एक आवारा है। इस कारण उच्चवलर्ग के लोग उनको मारता है। यह समाज में आज भी होनेवाला एक निम्नवर्गीय संघर्ष है। इनके प्रति कोई सहानुभूति प्रकट नहीं करती। "मगर आज उसके जखमों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाता है। खैर..वह देर तक सहानुभूति की प्रतीक्षा भी नहीं करता है।"[2] मिथिलेश्वर इस कहानी में मानसिक शोषाण और सामाजिक विडंबना का यथार्थ चित्रण करते हैं। यह समाज के सब ओर दिखाने केलिए और उसके साथ सबको समझने का कोशिश भी करते हैं।

उपर्युक्त कहानियों के अलावा पहली हँसी के बेरोजगार युवक, रात अभी बाकी है कहानी का बूढा निझावन, आखिरी बार का सरना आदि अनेक दभित पात्रों का चित्रण मिथिलेश्वर ने अपनी कहानियों में किया है। इनकी कहानियों के हर एक पात्र दमिन, निम्नवर्ग के विभिन्न पहलुओं को दर्शीय है।

[1] बन्द रास्तों के बीच – मिथिलेश्वर पृ.स. 76
[2]समकालीन हिन्दी कहानी और समाजवादी चेतना- डा. किरणबाला पृ.सं. 198
[1]वही, पृ.स. 180